समकालीन स्त्री लेखन और वैश्वीकरण

डॉ. मिन्तु
असि. प्रो.-हिन्दी
कु. मा. रा. म. स्ना. महा.
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

वैश्वीकरण की अवधारणा हमारी संस्कृति के लिए कोई नई बात नहीं है, तत्सम्बन्धी हमारी पारम्परिक अवधारणा 'वसुधैव कुटुम्बकम' के प्रकल्प में पूरे विश्व समुदाय को एक कुटुम्ब, एक कुल मानने का प्रबल आग्रह रहा है किन्तु वैश्वीकरण की शब्दावली का वैश्विक गाँव-ग्लोबल विलेज हमारी इस मानवतावादी धारणा से बिल्कुल अलग है। वैश्विक गाँव की मान्यता एक आर्थिक पक्ष बाजार तथा बाजारवाद-इसे हमारी पुरातन मान्यता से पूरी तरह अलग कर एक प्रछन्न और अघोषित आक्रमण का रूप दे डालता है। वैश्वीकरण का यह आर्थिक पक्ष इसे नव साम्राज्यवाद का रूप प्रदान करता है। प्रख्यात वैज्ञानिक शिक्षाविद प्रो. -यशपाल ने भी विचार किया है कि वर्तमान में यह वैश्वीकरण हमारे प्राचीन सांस्कृतिक आदर्श से किस प्रकार भिन्न है।

वैश्वीकरण का प्रभाव यूँ तो समग्र साहित्य में ही व्याप्त है किन्तु समकालीन स्त्री लेखन पर इसका वृहत्तम प्रभाव पड़ा है। स्त्री लेखन जगत किस प्रकार वैश्वीकरण से रुबरु होकर उसकी सकारात्मकता और नकारात्मकता से हमारा परिचय कराता है उसे प्रस्तुत करना इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है। समकालीन नारीवादी उपन्यास की एक अन्य विशेषता यह है कि स्वयं महिलाओं ने उपन्यास रचना क्षेत्र में पदार्पण किया। विगत दो दशकों से महिला लेखिकाओं की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। यह वृद्धि केवल संख्यात्मक न होकर गुणात्मक भी रही है।

स्त्री-विमर्श ने सदियों से चली आ रही है साहित्यिक मान्यताओं को चुनौती दी। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा निर्धारित नैतिक मापदण्डों को उसने तोड़ा। वास्तव में स्त्री-विमर्श स्त्री के अस्तित्वबोध की पहचान की उपज है। पितृसत्तात्मक मूल्यों के अनुरूप अपने नियंत्रण में रखने का पुरुष का आग्रह, इन दो विपरीत परिस्थितियों ने पति-पत्नी सम्बन्धों में विघटन की स्थिति को जन्म दिया। पति-पत्नी दो भिन्न इकाईयाँ बनकर अपने-अपने हितों के लिए संघर्षरत हैं। चित्रा चतुर्वेदी, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, रमा सिंह, वीणा सिन्हा, मधु कांकरिया, जया जादवानी, अलका सरावगी, नीरजा माधव, शिवानी, चित्रा मुद्गल, अनामिका आदि इसी प्रकार की रचनाकार हैं।

ISBN : 978-93-80216-17-1